International Journal of Indian Languages and Literature
A Peer-Reviewed Open Access Journal
ISSN : 3108-2254 IMPACT FACTOR : 4.25
Vol. 1, Issue 4 www.ijill.in July - Sept 2026

कालबेलिया और रोमा समुदाय: संगीत और नृत्य के माध्यम से लोकसंस्कृति का अंतरराष्ट्रीय संवाद

Dr. Rimjhim Sinha
Post Doc Fellow (ICSSR) SSVV

शोध सार: भारतीय लोकसंस्कृति अपनी विविधता और समृद्ध परंपराओं के लिए विश्वभर में प्रशंसित है। राजस्थान का कालबेलिया समुदाय, जो एक पारंपरिक घुमंतू समुदाय है, अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान के लिए जाना जाता है। इस समुदाय का कालबेलिया नृत्य उसकी जीवंत सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों में से एक प्रमुख रूप है। वर्ष 2010 में यूनेस्को द्वारा इसे अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के रूप में मान्यता प्रदान की गई, जो इसके वैश्विक महत्व तथा संरक्षण की आवश्यकता को रेखांकित करती है।

यह लेख कालबेलिया नृत्य की सांस्कृतिक विशेषताओं, उसकी अंतरराष्ट्रीय पहचान तथा संरक्षण से जुड़े प्रयासों का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। साथ ही, इसमें रोमा समुदाय के साथ इसकी सांस्कृतिक समानताओं की भी पड़ताल की गई है। दोनों समुदायों की घुमंतू जीवनशैली, संगीत और नृत्य में पाए जाने वाले साम्य यह संकेत देते हैं कि भारतीय लोकसंस्कृति का प्रभाव यूरोप तक विस्तृत हुआ है।

अध्ययन के निष्कर्ष बताते हैं कि कालबेलिया नृत्य न केवल भारतीय सांस्कृतिक पहचान का एक महत्वपूर्ण प्रतीक है, बल्कि यह वैश्विक सांस्कृतिक संवाद और विरासत संरक्षण में भी अहम भूमिका निभाता है।

बीच शब्द: कालबेलिया नृत्य, रोमा समुदाय, भारतीय लोकसंस्कृति, यूनेस्को, अमूर्त सांस्कृतिक विरासत, वैश्विक पहचान, लोकनृत्य।

उद्देश्य:

कालबेलिया नृत्य की सांस्कृतिक विशेषताओं का विश्लेषण करना; इसके वैश्विक महत्व और यूनेस्को मान्यता का मूल्यांकन करना; रोमा समुदाय के साथ सांस्कृतिक समानताओं की पड़ताल करना, लोकसंस्कृति के संरक्षण में कालबेलिया नृत्य की भूमिका को समझना।

International Journal of Indian Languages and Literature
A Peer-Reviewed Open Access Journal
ISSN : 3108-2254 IMPACT FACTOR : 4.25
Vol. 1, Issue 4 www.ijill.in July - Sept 2026

अनुसंधान पद्धति:

प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों का अध्ययन; प्राथमिक स्रोतों में समुदाय के वरिष्ठ कलाकारों और नर्तकियों के साक्षात्कार शामिल हैं, द्वितीयक स्रोतों में पुस्तकें, शोधपत्र और यूनेस्को की रिपोर्ट शामिल हैं; तुलनात्मक सांस्कृतिक विश्लेषण द्वारा कालबेलिया और रोमा समुदाय की परंपराओं का अध्ययन किया गया, अध्ययन का क्षेत्र राजस्थान के कालबेलिया समुदाय और यूरोप में रोमा समुदाय की लोकनृत्य परंपराएँ है।

भूमिका:

वैश्वीकरण के समकालीन परिप्रेक्ष्य में लोकसंस्कृतियों का अध्ययन केवल परंपराओं के दस्तावेजीकरण तक सीमित नहीं रह गया है, बल्कि यह अंतरसांस्कृतिक संवाद, पहचान-निर्माण और ऐतिहासिक संबंधों की पुनर्व्याख्या का महत्वपूर्ण माध्यम बन गया है। इसी संदर्भ में राजस्थान के कालबेलिया समुदाय की नृत्य-संगीत परंपरा एक विशिष्ट अध्ययन-विषय के रूप में उभरती है, जो घुमंतू जीवनशैली, प्रकृति-सापेक्ष जीवनदृष्टि तथा सांस्कृतिक अनुकूलन की जटिल प्रक्रियाओं को अभिव्यक्त करती है।

कालबेलिया नृत्य, अपनी गतिशील लय, लचीली शारीरिक अभिव्यक्तियों तथा सांकेतिक भाव-भंगिमाओं के माध्यम से केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि एक जीवित सांस्कृतिक पाठ केरूप में कार्य करता है, जिसमें समुदाय की ऐतिहासिक स्मृतियाँ, सामाजिक संरचनाएँ और सांस्कृतिक मूल्य अंतर्निहित होते हैं। यह नृत्य परंपरा स्थानीयता में निहित होते हुए भी वैश्विक मंचों पर अपनी उपस्थिति दर्ज कराती है, जिससे लोक और वैश्विक के बीच अंतर्संबंधों को समझने का अवसर प्राप्त होता है।

इसी क्रम में, रोमा समुदाय के साथ संभावित सांस्कृतिक अंतर्संबंधों की पड़ताल इस अध्ययन को एक व्यापक तुलनात्मक आयाम प्रदान करती है। दोनों समुदायों की सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों में परिलक्षित समानताएँ विशेषतः संगीत, नृत्य और घुमंतू जीवनशैली के संदर्भ में ऐतिहासिक प्रवास, सांस्कृतिक प्रसार और पारस्परिक प्रभावों की ओर संकेत करती हैं। अतः यह अध्ययन न केवल कालबेलिया नृत्य की सांस्कृतिक अर्थवत्ता को समझने का प्रयास है, बल्कि यह भी विश्लेषित करता है कि लोक कलाएँ किस प्रकार भौगोलिक सीमाओं से परे जाकर वैश्विक सांस्कृतिक संवाद की वाहक बनती हैं।

कालबेलिया समुदाय की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि:

नाथ परंपरा[i] के प्रभाव से मध्यकालीन भारत में "जोगी" शब्द का प्रयोग व्यापक रूप से दिखाई देता है। मध्यकालीन धार्मिक ग्रंथों, संत साहित्य और लोक परंपराओं में यह शब्द विशेष रूप से योगी, साधु और वैरागी व्यक्ति के अर्थ में प्रयुक्त होता था। उस समय "जोगी" किसी स्थायी जाति या समुदाय का नाम नहीं था, बल्कि एक आध्यात्मिक जीवन शैली को दर्शाने वाला शब्द था, जिसमें व्यक्ति संसारिक मोह-माया को छोड़कर योग और साधना

International Journal of Indian Languages and Literature
A Peer-Reviewed Open Access Journal
ISSN : 3108-2254 IMPACT FACTOR : 4.25
Vol. 1, Issue 4 www.ijill.in July - Sept 2026

का मार्ग अपनाता था। कालबेलिया समुदाय की उत्पत्ति से जुड़ी प्राचीन कथाएँ जोगी या सपेरा परंपरा से संबंधित हैं। 'जोग' की परंपरा को भगवान महादेव से आरंभ मानते हैं। समुदाय का कहना है कि जोगियों के पास अद्भुत सिद्धियाँ और करामातें होती थीं। हालाँकि यह एक सामुदायिक भावना थी इसके तथ्य या कोई प्रणाम लिखित तोर पर नहीं मिलता है।

नाथ पंथ की परंपरा में गोरखनाथ, जलंधरनाथ और मछंदरनाथ जैसे गुरु प्रमुख माने जाते हैं। जलंधरनाथ के शिष्य कनीपाव जी थे, जिन्हें कालबेलिया समुदाय अपना गुरु मानता है। इन कथाओं में गुरु-शिष्य परंपरा, तप, त्याग और चमत्कारों का विशेष महत्व बताया गया है।

मछंदरनाथ किसी समय माया में फँसकर गृहस्थ जीवन में लिप्त हो गए थे। तब गोरखनाथ ने उन्हें पुनः नाथ पंथ में लाने का प्रयास किया। इसी क्रम में कई घटनाएँ घटित हुईं, जिनमें उनके शिष्यों की परीक्षा ली गई और उनसे जुड़ी विभिन्न धार्मिक मान्यताएँ विकसित हुईं। कालबेलिया समुदाय गोरखनाथ को आज भी जीवित मानते हैं और उन्हें अत्यंत श्रद्धा से पूजते हैं। विभिन्न ग्रंथों और लोकमान्यताओं में गोरखनाथ को एक महान योगी माना गया है, जिनका प्रभाव अनेक धार्मिक परंपराओं में दिखाई देता है।

तंत्रशास्त्र[ii] की मान्यताओं के अनुसार गोरखनाथ को 11 रुद्रों में से एक माना जाता है। इन 11 रुद्रों का विवरण इस प्रकार दिया जाता है। शिव, गोरखनाथ, भैरवनाथ (काली देवी से उत्पन्न), हनुमान (अंजनी माता से जन्मे) कार्तिकेय (पार्वती से उत्पन्न), दुर्वासा, कामदेव, संतनाथ, रामनाथ, श्रृंगनाथ, धर्मनाथ, जलंधरनाथ को भी गोरखनाथ का शिष्य बताया गया है। इन विवरणों से स्पष्ट होता है कि जोगी पंथ के प्रसार में गोरखनाथ की महत्वपूर्ण भूमिका रही। भरथरी और गोपीचंद[iii] जैसे राजाओं के जोगी बनने से यह पंथ पूरे भारत में फैल गया।

मारवाड़ क्षेत्र में जोगियों की कई शाखाएँ पाई जाती हैं, जिनमें प्रमुख हैं, नाथ (कनफटे जोगी), मसानिये जोगी, कालबेलिया, ओघड़, अघोरी और रावल (मोहन लाल जोड़ 2011) इस प्रकार स्पष्ट होता है कि कालबेलिया समुदाय जोगियों की जमात में से निकले हुए हैं। जोधपुर में आज भी महामंदिर और उदयमंदिर में इनके मठ बने हुए हैं और उनसे संबंधित परंपराएँ आज भी जीवित हैं। कालबेलिया लोग जालोर और जैसलमेर तक फैले हुए हैं और अपने गुरु कनीपाव नाथ जी की गद्दी को विशेष श्रद्धा से मानते हैं।

कालबेलिया समुदाय सभी हिन्दू त्योहारों को मानते हैं और विशेष रूप से दशहरे के अवसर पर अपने गुरु कानिफनाथ की पूजा बड़े उत्साह से करते हैं। इस अवसर पर पूजा-पाठ, नृत्य, संगीत और सामूहिक भोज का आयोजन होता है तथा बच्चों का कर्णछेदन संस्कार भी किया जाता है।

मध्यकालीन संत साहित्य (लगभग 12वीं से 15वीं शताब्दी) में भी "जोगी" शब्द का प्रयोग मिलता है। इस परंपरा में कबीर, गोरखनाथ परंपरा के अनुयायी और अन्य संत कवियों ने "जोगी" शब्द का उपयोग योगी, साधु और

International Journal of Indian Languages and Literature
A Peer-Reviewed Open Access Journal
ISSN : 3108-2254 IMPACT FACTOR : 4.25
Vol. 1, Issue 4 www.ijill.in July - Sept 2026

कभी-कभी ढोंगी साधुओं के लिए भी किया है। यहाँ यह शब्द आध्यात्मिक साधक और सामाजिक आलोचना दोनों अर्थों में प्रयुक्त हुआ है। इसके साथ ही लोक साहित्य, विशेषकर राजस्थानी, अवधी और ब्रज क्षेत्र की परंपराओं में "जोगी" शब्द अत्यंत सामान्य रूप से मिलता है। लोक गीतों, कहावतों और लोक कथाओं में "जोगी" को अक्सर एक घूमने वाले वैरागी व्यक्ति के रूप में दर्शाया गया है, जो एक स्थान पर स्थिर नहीं रहता। उदाहरण के रूप में लोक परंपरा में कहा जाता है "जोगी घूमता फिरता साधु", जहाँ इसका अर्थ एक ऐसे व्यक्ति से है जो संसार से विरक्त होकर लगातार भ्रमण करता रहता है।

लोक साहित्य में एक और भाव मिलता है "प्रेम में विरह वाला जोगी", जहाँ "जोगी" शब्द का प्रयोग उस व्यक्ति के लिए किया जाता है जो प्रेम में विछोह के कारण संसार से विरक्त होकर साधु जैसा जीवन जीने लगता है। इस प्रकार लोक परंपराओं में "जोगी" शब्द का अर्थ केवल धार्मिक साधु तक सीमित नहीं रहा, बल्कि यह भावनात्मक और सामाजिक प्रतीक के रूप में भी विकसित हुआ।

कालबेलिया जाति मुख्य रूप से राजस्थान के पाली, अजमेर, चित्तौड़गढ़ और उदयपुर क्षेत्रों में पाई जाती है, जबकि कुछ समूह महाराष्ट्र में भी निवास करते हैं। यह एक घुमक्कड़ जाति है, जो स्थायी रूप से एक स्थान पर नहीं रहती। ये लोग छोटे-छोटे समूहों में रहना पसंद करते हैं और जहाँ भी अनुकूल स्थान मिलता है, वहीं अपने डेरे या तंबू लगा लेते हैं। इनके साथ प्रायः एक गधा और एक कुत्ता होता है गधा सामान ढोने के लिए और कुत्ता सुरक्षा एवं शिकार में सहायता के लिए।

जोधपुर के जगदीश सिंह गहलोत शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित पुस्तक "मरदुम शुमारी राजमारवाड़[iv] 1891" में उल्लेख मिलता है कि कालबेलिया समुदाय का प्रमुख धार्मिक स्थान जोधपुर के ढीकाई गाँव में स्थित है, जिसे वे अपने गुरु कनीपाव जी की गद्दी मानते हैं। कनीपाव नाथ, जलंधर नाथ के शिष्य थे और अपनी सिद्धियों के लिए प्रसिद्ध माने जाते थे। कहा जाता है कि वे लोगों को साँप और बिच्छुओं से बचाने के लिए उन्हें पकड़ते थे।

समय के साथ, साँपों को पकड़ने और खाने की प्रथा के कारण इन्हें नाथ संप्रदाय से अलग कर दिया गया और इन्हें निम्न समझा जाने लगा। "कालबेलिया" शब्द का संबंध "कारबारेया" से माना जाता है, जिसका अर्थ है अपनी परंपरागत मर्यादा से अलग हो जाना। ये लोग पावपंथी कहलाते हैं और कुछ अपने नाम के अंत में "पाव" भी लगाते हैं।

कालबेलिया समुदाय की एक विशेष परंपरा यह भी है कि वे कान छिदवाकर बड़े मुंदरे नहीं पहनते, बल्कि मुरकियाँ धारण करते हैं। इनके आभूषण काँसा, पीतल या चाँदी के होते हैं, जिन्हें "तुंगल" कहा जाता है। इनमें एक सांकली लगी होती है, जिससे इन्हें कान के ऊपर भी टाँका जा सकता है। वे काँच और गेंडे की खाल से बने आभूषण नहीं पहनते थे।

International Journal of Indian Languages and Literature
A Peer-Reviewed Open Access Journal
ISSN : 3108-2254 IMPACT FACTOR : 4.25
Vol. 1, Issue 4 www.ijill.in July - Sept 2026

कालबेलिया को ब्रिटिश भारत की जनगणना रिपोर्टों (1871, 1881, 1891, 1901) तथा राजपूताना क्षेत्र के गजेटियरों (राजपूताना एजेंसी गजेटियर, जोधपुर राज्य गजेटियर, जयपुर राज्य गजेटियर) में मुख्यतः एक घुमंतू एवं व्यवसाय-आधारित समुदाय के रूप में दर्ज किया गया है। इन अभिलेखों में ब्रिटिश प्रशासन ने कलबेलिया को उनके स्थायी निवास की बजाय उनके पेशे और जीवनशैली के आधार पर वर्गीकृत किया तथा उन्हें "राजपूताना के घूमने वाले साँप पकड़ने वाले" और "रेगिस्तानी क्षेत्रों के घुमंतू प्रदर्शनकारी" के रूप में वर्णित किया (भारत की जनगणना, 1891; राजपूताना एजेंसी गजेटियर)। इससे स्पष्ट होता है कि उनकी पहचान को स्थायी जाति की बजाय घुमंतू व्यवसायिक समूह के रूप में देखा गया। "कालबेलिया" नाम का लिखित प्रयोग ब्रिटिश सर्वेक्षण काल में सामने आया, जबकि इससे पहले यह पहचान मुख्यतः मौखिक परंपरा में प्रचलित थी।

(भारत की जनगणना, 1881; राजपूताना एजेंसी गजेटियर)। ब्रिटिश अधिकारियों ने राजस्थान (तत्कालीन राजपूताना) के अध्ययन के दौरान इस समुदाय को साँप पकड़ने और प्रदर्शन करने वाले समूह के रूप में "कालबेलिया जनजाति" के रूप में दर्ज किया (राजपूताना एजेंसी गजेटियर; जोधपुर राज्य गजेटियर)। स्थानीय स्तर पर इन्हें सामान्यतः "साँप पकड़ने वाले" या "सपेरा" कहा जाता था (भारत की जनगणना, 1871)।

ब्रिटिश जनगणना एवं गजेटियरों में कलबेलिया की कला को उनकी आजीविका का प्रमुख साधन माना गया, जिसमें साँप पकड़ना, "पुंगी" वाद्य से साँपों का प्रदर्शन करना तथा महिलाओं द्वारा किया जाने वाला घूमता हुआ नृत्य प्रमुख रूप से शामिल था (जयपुर राज्य गजेटियर; जोधपुर राज्य गजेटियर; भारत की जनगणना, 1901)। इन गतिविधियों को गाँवों, मेलों तथा रेगिस्तानी क्षेत्रों में किए जाने वाले घुमंतू प्रदर्शन के रूप में दर्ज किया गया (भारत की जनगणना, 1891; राजपूताना एजेंसी गजेटियर)।

ब्रिटिश दृष्टिकोण में कालबेलिया को "घूमने वाला", "स्थायी निवास रहित" तथा "व्यवसाय-आधारित जनजाति" के रूप में देखा गया, जिसमें उनकी कला को सांस्कृतिक विरासत की बजाय आजीविका का साधन माना गया (भारत की जनगणना, 1901; विलियम क्रुक, 1896; एच. एच. रिसले, 1891)।

कालबेलिया नृत्य को UNESCO ने 2010 में मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत (Intangible Cultural Heritage of Humanity) की सूची में शामिल किया। यूनेस्को के अनुसार यह केवल एक नृत्य नहीं है, बल्कि एक जीवित सांस्कृतिक परंपरा है जो पीढ़ी दर पीढ़ी समुदाय के भीतर मौखिक रूप से, अभ्यास के माध्यम से और सामूहिक जीवनशैली के जरिए आगे बढ़ती है। कालबेलिया समुदाय की पहचान, उनकी कला, संगीत और जीवन-दृष्टि इस नृत्य में गहराई से जुड़ी हुई है। यूनेस्को ने इसे इसलिए मान्यता दी क्योंकि यह परंपरा आधुनिकता के दबाव के बावजूद अपनी मौलिकता और सांस्कृतिक निरंतरता को बनाए हुए है।

International Journal of Indian Languages and Literature
A Peer-Reviewed Open Access Journal
ISSN : 3108-2254 IMPACT FACTOR : 4.25
Vol. 1, Issue 4 www.ijill.in July - Sept 2026

यूनेस्को के दस्तावेजों में कालबेलिया नृत्य को "सांस्कृतिक अभिव्यक्ति की जीवंत परंपरा" के रूप में वर्णित किया गया है, जिसमें नृत्य, गीत और संगीत एक साथ मिलकर एक समग्र कलात्मक रूप बनाते हैं। इस नृत्य में महिलाओं की लयात्मक और घूमती हुई चालें सांप की गति की नकल करती हैं, जबकि पुरुष पारंपरिक वाद्य जैसे पुंगी, ढोलक, खंजरी आदि बजाते हैं। यूनेस्को यह भी बताता है कि यह नृत्य कालबेलिया समुदाय की ऐतिहासिक जीवनशैली से जुड़ा है, जो पहले सांप पकड़ने और घुमंतू जीवन के लिए जाना जाता था। समय के साथ यह कला एक सांस्कृतिक पहचान में बदल गई।

यूनेस्को की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत सूची का मुख्य उद्देश्य उन परंपराओं को संरक्षित करना है जो भौतिक रूप से नहीं बल्कि ज्ञान, कौशल और परंपराओं के रूप में जीवित रहती हैं। कालबेलिया नृत्य इस परिभाषा के अनुरूप है क्योंकि इसमें कोई लिखित ग्रंथ नहीं है, बल्कि यह अभ्यास, प्रशिक्षण और समुदाय के भीतर सीखने की प्रक्रिया से जीवित रहता है। यूनेस्को ने इस बात पर जोर दिया है कि यह परंपरा केवल मनोरंजन नहीं बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक पहचान का माध्यम भी है।

यूनेस्को के अनुसार कालबेलिया गीतों में जीवन के विभिन्न पहलुओं प्रकृति, प्रेम, विरह, आध्यात्मिकता और सामाजिक अनुभवों का वर्णन मिलता है। ये गीत अक्सर तात्कालिक रूप से गाए जाते हैं और इनमें मौखिक रचनात्मकता का महत्वपूर्ण स्थान है। यह परंपरा इस बात का उदाहरण है कि कैसे एक समुदाय बिना लिखित साहित्य के भी अपनी संस्कृति को समृद्ध और जीवंत बनाए रख सकता है।

यूनेस्को ने यह भी उल्लेख किया है कि कालबेलिया नृत्य महिलाओं की भूमिका को विशेष रूप से उजागर करता है। इस परंपरा में महिलाएँ न केवल नृत्य करती हैं बल्कि गीतों की रचना और प्रस्तुति में भी सक्रिय भूमिका निभाती हैं। यह सांस्कृतिक समानता और सामुदायिक भागीदारी का एक महत्वपूर्ण उदाहरण है। इस नृत्य में वेशभूषा भी अत्यंत महत्वपूर्ण है, काले रंग के घाघरे पर रंगीन कढ़ाई और घूमते हुए पैटर्न इसकी पहचान हैं, जो नृत्य के दौरान दृश्यात्मक सौंदर्य उत्पन्न करते हैं।

परंपरा वैश्विक स्तर पर सांस्कृतिक विविधता को बढ़ावा देती है। इसी क्रम में कालबेलिया नृत्य अब केवल राजस्थान या भारत तक सीमित नहीं रहा, बल्कि यह अंतरराष्ट्रीय सांस्कृतिक मंचों पर भी व्यापक रूप से प्रस्तुत किया जाने लगा है। इसकी विश्वव्यापी पहचान बनाने में कलाकारों जैसे गुलाबो सपेरा, आशा सपेरा और रेखा सपेरा का महत्वपूर्ण योगदान रहा है, जिन्होंने इस लोकनृत्य को देश-विदेश में प्रस्तुत कर इसे नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया। UNESCO द्वारा इसे अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के रूप में मान्यता मिलने के बाद इसकी प्रतिष्ठा और भी बढ़ गई। इसके परिणाम स्वरूप न केवल इस कला का संरक्षण हुआ, बल्कि कालबेलिया समुदाय को आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक पहचान भी प्राप्त हुई, जिससे यह नृत्य वैश्विक सांस्कृतिक धरोहर का महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया है।

International Journal of Indian Languages and Literature
A Peer-Reviewed Open Access Journal
ISSN : 3108-2254 IMPACT FACTOR : 4.25
Vol. 1, Issue 4 www.ijill.in July - Sept 2026

रोमा और कालबेलिया समुदाय में संगीत और नृत्य की भूमिका:

रोमा और कालबेलिया दोनों समुदायों में संगीत और नृत्य केवल मनोरंजन के साधन नहीं हैं, बल्कि ये उनकी सामाजिक पहचान, ऐतिहासिक स्मृति और जीवन-यापन की परंपरा के महत्वपूर्ण आधार हैं। रोमा समुदाय में संगीत और नृत्य पीढ़ियों से चली आ रही खानाबदोश जीवनशैली से जुड़ा हुआ है, जहाँ गीत और नृत्य उनकी सामूहिक स्मृतियों, संघर्षों और सांस्कृतिक पहचान को व्यक्त करने का माध्यम बनते हैं; इसी तरह उनके लोक-नृत्य और संगीत में भावनात्मक अभिव्यक्ति, लय और सामुदायिक एकता प्रमुख रूप से दिखाई देती है, और शोध लेख यह भी दर्शाते हैं कि उनके नृत्य और संगीत की जड़ें भारतीय परंपराओं से जुड़ी हुई हैं, जिससे सांस्कृतिक निरंतरता का संकेत मिलता है।[v]

रोमा समुदाय का संगीत मुख्यतः यूरोप और अन्य देशों में फैला हुआ है, जिसमें भावनात्मक गायन, वायलिन, गिटार, पोंग, खंजरी और ढोलक और तालवाद्य का उपयोग होता है। इनके गीत अक्सर जीवन के संघर्ष, प्रेम, स्वतंत्रता और प्रवास के अनुभवों को दर्शाते हैं। रोमा संगीत ने फ्लेमेंको (स्पेन) जैसे कई विश्व-प्रसिद्ध संगीत रूपों को भी प्रभावित किया है। रोमा समुदाय में संगीत केवल मनोरंजन का साधन नहीं था, बल्कि उनकी आजीविका और सामाजिक संगठन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा भी था। ऐतिहासिक रूप से यूरोप में रोमा संगीतकार अक्सर "लाउतारी (lăutari)" जैसे पेशेवर समूहों में संगठित होते थे, जो परिवार-आधारित संगीत मंडलियों के रूप में काम करते थे। ये समूह शादियों, त्योहारों और दरबारी आयोजनों में संगीत प्रस्तुत करते थे और धीरे-धीरे एक तरह की अर्ध-गिल्ड प्रणाली विकसित कर लेते थे, जहाँ संगीत एक पारंपरिक "हस्तकला पेशा" माना जाता था।

रोमा संगीत में कौशल का विकास पारिवारिक प्रशिक्षण के माध्यम से होता था, जिसमें बच्चे छोटी उम्र से ही अपने परिवार के वरिष्ठ संगीतकारों से वादन और गायन सीखते थे। रोमा संगीतकार अक्सर "तराफ" नामक छोटे संगठित पेशेवर समूहों में काम करते थे, जो किसी एक नेता (primaș) के अधीन रहते हुए सामूहिक रूप से प्रदर्शन करते थे। उनकी सामाजिक और आर्थिक भूमिका भी महत्वपूर्ण थी, क्योंकि वे केवल कलाकार नहीं थे, बल्कि गाँवों, शाही दरबारों और सामाजिक आयोजनों में उनकी सेवाएँ आवश्यक मानी जाती थीं, जिससे उनका पेशा आर्थिक रूप से मजबूत बन गया। रोमा संगीत हमेशा स्थानीय संस्कृतियों से प्रभावित होता रहा है, जैसे बाल्कन, स्पेनिश फ्लेमेंको, हंगेरियन और रूसी संगीत, जिससे उनकी संगीत शैली समय के साथ लगातार विकसित और समृद्ध होती गई। कुछ क्षेत्रों में रोमा संगीतकारों के समूह इतने संगठित थे कि उन्हें राज्य या स्थानीय व्यवस्था द्वारा एक पेशेवर वर्ग या गिल्ड जैसी मान्यता भी प्राप्त थी।

वहीं दूसरी ओर भारत के राजस्थान से संबंधित कालबेलिया समुदाय की संगीत परंपरा अत्यंत जीवंत और नृत्य-प्रधान है। कालबेलिया संगीत में पारंपरिक वाद्य जैसे पोंग, खंजरी और ढोलक का उपयोग होता है, और गीतों में

International Journal of Indian Languages and Literature
A Peer-Reviewed Open Access Journal
ISSN : 3108-2254 IMPACT FACTOR : 4.25
Vol. 1, Issue 4 www.ijill.in July - Sept 2026

प्रकृति, प्रेम और रोजमर्रा के जीवन की कहानियाँ होती हैं। कालबेलिया नृत्य और संगीत को उनकी लचीली, सांप जैसी गति और ऊर्जा के लिए भी जाना जाता है, जिसे UNESCO ने भी सांस्कृतिक धरोहर के रूप में मान्यता दी है। यह भी गिल्ड प्रणाली का हिस्सा रहे हैं। जिसमें उम्दा कलाकार होते थे उनको बचपन से संगीत, नृत्य की शिक्षा दी जाती थी।

कालबेलिया नृत्य की शैली एवं संरचना:

कालबेलिया नृत्य की शैली को एक समृद्ध kinesthetic vocabulary[vi] के रूप में समझा जा सकता है, जिसमें शरीर की लचक, संतुलन और प्रवाहमय गतियाँ केंद्रीय भूमिका निभाती हैं। यह नृत्य सर्प की गतिशीलता से प्रेरित एक विशिष्ट embodied expression[vii] प्रस्तुत करता है, जिसमें नर्तकियों का शरीर एक निरंतर लहरदार संरचना में संचालित होता है। इस प्रकार, कालबेलिया नृत्य केवल दृश्यात्मक प्रदर्शन नहीं, बल्कि शरीर के माध्यम से सांस्कृतिक अर्थों का संप्रेषण (embodiment of cultural meaning)[viii] भी है।

इसके *लयात्मक प्रतिरूप* लचीले तथा क्रमिक रूप से विकसित होने वाले होते हैं, जिनमें प्रारंभिक धीमी गति (लय) से तीव्र और जटिल तालों की ओर संक्रमण देखा जाता है। यह लयात्मक संरचना न केवल संगीत के साथ समन्वित होती है, बल्कि नर्तकी के शरीर की गतियों के साथ एक अंतः क्रियात्मक समन्वय स्थापित करती है। इस प्रक्रिया में *तात्कालिक सृजनशीलता* एक महत्वपूर्ण तत्व के रूप में उभरती है, जो प्रदर्शन को स्थिरता के बजाय गतिशीलता और नवीनता प्रदान करती है।

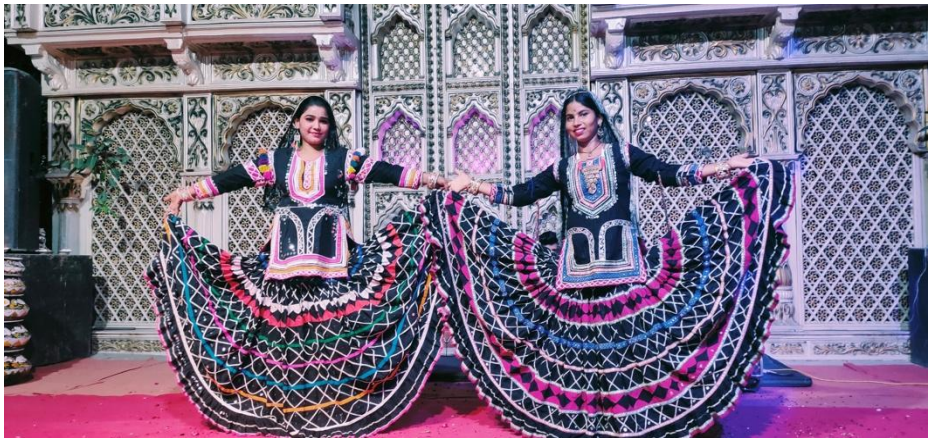
कालबेलिया नृत्य का *प्रदर्शन-स्थल* भी इसकी संरचना का एक महत्वपूर्ण आयाम है। यह नृत्य पारंपरिक मंच तक सीमित नहीं है, बल्कि खुले स्थानों, मेलों और सामुदायिक आयोजनों में भी समान रूप से प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया जाता है। इस प्रकार, इसका प्रदर्शन-संदर्भ दर्शक और कलाकार के बीच की दूरी को कम करता है, जिससे एक सहभागी और अंतः क्रियात्मक सांस्कृतिक अनुभव निर्मित होता है।

गतियों की दृष्टि से, इस नृत्य में *वृत्ताकारता, स्थानिक प्रवाह* और *गतिशील संतुलन* जैसे तत्व प्रमुख हैं। तीव्र घुमाव, शरीर का लोचदार झुकाव, तथा हाथों और कमर की समन्वित गतियाँ एक जटिल *गतिशील संरचना* का निर्माण करती हैं। इसके साथ ही, चेहरे के भाव और दृष्टि नृत्य की अभिव्यक्तिपूर्ण संरचना को और अधिक गहन बनाते हैं।

अंततः, वेशभूषा और संगीत इस नृत्य के *सौंदर्यात्मक ढाँचे* को सुदृढ़ करते हैं। पारंपरिक परिधान, विशेषतः घाघरा की घेरदार संरचना, गतियों की दृश्यात्मकता को बढ़ाते हुए एक विस्तृत *दृश्य लय* उत्पन्न करती है। वाद्ययंत्रों, जैसे ढोलक, खंजरी और बीनकी ध्वनियाँ नृत्य की लयात्मक संरचना को आधार प्रदान करती हैं, जिससे एक समग्र *प्रदर्शनात्मक समन्वय* निर्मित होता है। इस प्रकार, कालबेलिया नृत्य की शैली एवं संरचना को एक बहुआयामी

International Journal of Indian Languages and Literature
A Peer-Reviewed Open Access Journal
ISSN : 3108-2254 IMPACT FACTOR : 4.25
Vol. 1, Issue 4 www.ijill.in July - Sept 2026

सांस्कृतिक प्रदर्शन के रूप में देखा जा सकता है, जिसमें शरीर, लय, स्थान और अभिव्यक्ति के विभिन्न तत्व एकीकृत होकर एक सशक्त लोक-कलात्मक रूप का निर्माण करते हैं।



कालबेलिया नर्तकी दिल्ली 2021 स्रोत- रिमझिम सिन्हा

रोमा और कालबेलिया समुदाय का अंतरराष्ट्रीय संवाद:

कालबेलिया समुदाय और रोमा समुदाय के बीच तुलनात्मक अध्ययन सांस्कृतिक नृविज्ञान तथा प्रवासन अध्ययन के अंतर्गत एक महत्वपूर्ण विमर्श प्रस्तुत करता है। रोमा समुदाय, जिसे व्यापक रूप से यूरोप में फैले एक घुमंतू जातीय समूह के रूप में जाना जाता है, की उत्पत्ति भारतीय उपमहाद्वीप से मानी जाती है (Hancock, 2002. पेज.12)। भाषाई, सांस्कृतिक तथा आनुवंशिक अध्ययनों से यह संकेत मिलता है कि रोमा समुदाय का ऐतिहासिक संबंध उत्तर-पश्चिमी भारत के घुमंतू समूहों से जुड़ा हुआ है (Fraser, 1992, पेज. 45; Sinha, 2025, पेज. 22).

दोनों समुदायों की जीवनशैली में घुमंतूपन एक केंद्रीय तत्व के रूप में विद्यमान है, जो उनकी सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों विशेषतः संगीत और नृत्यको आकार देता है (Kapadia,1993,पेज.20)। कालबेलिया नृत्य और रोमा नृत्य-शैलियों में पाए जाने वाले शारीरिक गतियों के पैटर्न, जैसे लचीली गतियाँ, तीव्र घुमाव तथा भावप्रधान अभिव्यक्तियाँ, साझा सांस्कृतिक विरासत की ओर संकेत करती हैं (Sharma 78.p.78; Sinha, 2025, p.35)

संगीत की दृष्टि से भी दोनों समुदायों में गहरे साम्य दृष्टिगोचर होते हैं। रोमा संगीत की लयात्मक संरचनाओं तथा स्वरों की गतिशीलता में भारतीय लोकसंगीत की झलक मिलती है (Acton & Mundy, 1997, p. 63) इसी प्रकार, कालबेलिया समुदाय में प्रयुक्त बीन, ढोलक और खंजरी जैसे वाद्ययंत्र एक विशिष्ट श्रव्य परंपरा का निर्माण करते हैं, जो मौखिक परंपरा के माध्यम से पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित होती है। **(Sinha, 2025, p.41)**।

International Journal of Indian Languages and Literature
A Peer-Reviewed Open Access Journal
ISSN : 3108-2254 IMPACT FACTOR : 4.25
Vol. 1, Issue 4 www.ijill.in July - Sept 2026

प्रदर्शन-स्थल के संदर्भ में भी दोनों समुदायों में समानताएँ पाई जाती हैं। दोनों ही समुदाय अपने नृत्य और संगीत को औपचारिक मंचों के अतिरिक्त सामाजिक एवं सामुदायिक संदर्भों जैसे मेलों, उत्सवों और पारिवारिक आयोजनों में प्रस्तुत करते हैं, जिससे एक सहभागी सांस्कृतिक वातावरण निर्मित होता है।

हालाँकि, ऐतिहासिक और भौगोलिक संदर्भों के कारण दोनों समुदायों की सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों में भिन्नताएँ भी विकसित हुई हैं। रोमा समुदाय ने यूरोपीय समाजों के साथ अंतः क्रिया के परिणामस्वरूप अपनी कला में विभिन्न स्थानीय प्रभावों को आत्मसात किया है जबकि कालबेलिया नृत्य अपेक्षाकृत अधिक स्थानीय सांस्कृतिक संदर्भों से जुड़ा हुआ है। **(Sharma, 1992. p. 82; Sinha, 2025, p.53)।**



रोमानी नर्तकी रोमानिया स्रोत- रिमझिम सिन्हा 2025 कालबेलिया नर्तकी पेरिस स्रोत- रिमझिम सिन्हा 2022

कालबेलिया और रोमा समुदाय आज एक ही मंच पर अपने नृत्य और संगीत की प्रस्तुतियाँ देकर सांस्कृतिक एकता का संदेश दे रहे हैं। आशा, गुलाबो सपेरा, रोमा नर्तकी सहिदा काशिम और रेशमा जैसी कलाकारें इस साझी सांस्कृतिक परंपरा और आपसी मेल-जोल के उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

सांस्कृतिक स्तर पर, नृत्य और संगीत दोनों ही समुदायों के लिए पहचान, परंपरा-संरक्षण और सामुदायिक अभिव्यक्ति के प्रमुख माध्यम के रूप में कार्य करते हैं। भिन्न भौगोलिक संदर्भों के कारण रोमा समुदाय ने यूरोपीय समाजों के साथ संपर्क के परिणामस्वरूप अपनी सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों में विविध स्थानीय तत्वों को समाहित किया है (Fraser. 1992. pp.102), जबकि कालबेलिया परंपरा अपेक्षाकृत अधिक स्थानीय सांस्कृतिक संदर्भों से संबद्ध बनी रही है। इस प्रकार, दोनों समुदायों के बीच विद्यमान सांस्कृतिक साम्य ऐतिहासिक प्रवासन, सांस्कृतिक प्रसार और अनुकूलन की दीर्घकालिक प्रक्रियाओं का परिणाम माने जा सकते हैं।

कालबेलिया नृत्य की संरचना में संगीत एक केंद्रीय तत्त्व के रूप में कार्य करता है, जो नृत्य की गति, विन्यास और अभिव्यक्ति को नियंत्रित करता है। यह संगीत लोक परंपरा पर आधारित एक जीवंत सांस्कृतिक प्रक्रिया है,

International Journal of Indian Languages and Literature
A Peer-Reviewed Open Access Journal
ISSN : 3108-2254 IMPACT FACTOR : 4.25
Vol. 1, Issue 4 www.ijill.in July - Sept 2026

जिसका संचार मुख्यतः मौखिक माध्यम से होता है। इसकी लयात्मक संरचना क्रमिक विकास का अनुसरण करती है, जिसमें धीमी शुरुआत से तीव्रता की ओर बढ़ते हुए एक संतुलित ताल-विन्यास निर्मित होता है, जो नर्तकियों की शारीरिक गतियों के साथ सुसंगत संबंध स्थापित करता है।

रोमा समुदाय के संगीत के साथ तुलनात्मक दृष्टि से देखने पर यह स्पष्ट होता है कि दोनों परंपराएँ भिन्न भौगोलिक परिवेशों में विकसित होने के बावजूद कुछ समान सांगीतिक विशेषताओं को साझा करती हैं। रोमा संगीत में प्रयुक्त वायलिन, गिटार और अकॉर्डियन जैसे वाद्ययंत्र उनकी सांस्कृतिक विविधता को दर्शाते हैं, परंतु उनका उद्देश्य भी लयात्मक गहराई, स्वर-विस्तार और भावात्मक अभिव्यक्ति को सशक्त बनाना ही होता है।

दोनों समुदायों की संगीत परंपराओं में तात्कालिक सृजनशीलता एक महत्वपूर्ण तत्व है, जहाँ कलाकार प्रस्तुति के दौरान परिस्थितियों के अनुसार लय और ध्वनि में परिवर्तन करते हैं। यह विशेषता संगीत को स्थिर न रखकर एक गतिशील और जीवंत अभिव्यक्ति में परिवर्तित करती है। साथ ही, गायन शैली में कथात्मकता और भावप्रधानता प्रमुख रहती है, जिसके माध्यम से सामाजिक अनुभव, ऐतिहासिक स्मृतियाँ और सांस्कृतिक पहचान व्यक्त होती हैं।

इस प्रकार, यह स्पष्ट होता है कि कालबेलिया और रोमा समुदायों की संगीत परंपराएँ सांस्कृतिक निरंतरता, प्रवासन और अनुकूलन की दीर्घकालिक प्रक्रियाओं का परिणाम हैं। दोनों के बीच विद्यमान समानताएँ यह दर्शाती हैं कि संगीत और वाद्ययंत्र केवल कलात्मक साधन नहीं हैं, बल्कि वे अंतरसांस्कृतिक संबंधों को समझने का एक महत्वपूर्ण माध्यम भी हैं।




आशा सपेरा कालबेलिया नर्तकी स्रोत-रिमझिम 2021 रोमानी नर्तकी सईदा कास्यम अपने समूह के साथ स्रोत- सईदा 2023

International Journal of Indian Languages and Literature
A Peer-Reviewed Open Access Journal
ISSN : 3108-2254 IMPACT FACTOR : 4.25
Vol. 1, Issue 4 www.ijill.in July - Sept 2026

निष्कर्ष:

इस शोध कार्य से यह स्पष्ट होता है कि कालबेलिया नृत्य केवल राजस्थान की एक पारंपरिक लोकनृत्य शैली नहीं है, बल्कि यह भारतीय लोकसंस्कृति की जीवंत और वैश्विक पहचान का महत्वपूर्ण प्रतीक भी है। इसकी लयात्मक गतियाँ, गीत-संगीत और घुमंतू जीवनशैली से जुड़ी सांस्कृतिक अभिव्यक्तियाँ इसे विशिष्ट बनाती हैं। यूनेस्को द्वारा 2010 में इसे अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के रूप में मान्यता मिलना इसकी अंतरराष्ट्रीय महत्ता को सिद्ध करता है।

रोमा समुदाय के साथ किए गए तुलनात्मक अध्ययन से यह तथ्य सामने आता है कि दोनों समुदायों की सांस्कृतिक परंपराओं में उल्लेखनीय समानताएँ हैं, जैसे घुमंतू जीवन, संगीत एवं नृत्य के माध्यम से भावनाओं की अभिव्यक्ति तथा सामुदायिक जीवन शैली। यह समानताएँ दर्शाती हैं कि लोकसंस्कृति सीमाओं में बंधी नहीं होती, बल्कि यह विभिन्न समाजों के बीच सांस्कृतिक संवाद का माध्यम बनती है।

कालबेलिया नृत्य न केवल सांस्कृतिक संरक्षण का विषय है, बल्कि यह वैश्विक स्तर पर लोकसंस्कृति के आदान-प्रदान और आपसी समझ को भी सशक्त बनाता है। इसके संरक्षण एवं संवर्धन के लिए निरंतर प्रयास आवश्यक हैं, ताकि आने वाली पीढ़ियाँ इस समृद्ध परंपरा से जुड़ी रह सकें और इसे आगे बढ़ा सकें।

पाद-टिप्पणियाँ

[i] https://en.wikipedia.org/wiki/Avalokite%C5%9Bvara

[ii] तंत्रशास्त्र भारतीय परंपरा में एक मान्य आध्यात्मिक साधना प्रणाली है, जो मंत्र, यंत्र और शक्ति (जैसे कुण्डलिनी ऊर्जा) के माध्यम से आत्मज्ञान और उन्नति का मार्ग बताती है।

[iii] *भरथरी (भर्तृहरि) और गोपीचंद दोनों राजा थे जिन्होंने राज-पाट छोड़कर नाथ योगी बनकर वैराग्य और साधना का मार्ग अपनाया।*

[iv] *मरदुम शुमारी राजमारवाड़" का मतलब है राजमारवाड़ (मारवाड़ क्षेत्र) की जनगणना (census)।*

[v] https://www.sav.sk/ पेज 49,2025

[vi] *शरीर की गतियों, हाव-भाव और शारीरिक अभिव्यक्तियों के माध्यम से अर्थ या भाव व्यक्त करने की प्रणाली।*

[vii] *वह प्रक्रिया है जिसमें शरीर की गतियों, मुद्राओं और हाव-भाव के माध्यम से सांस्कृतिक अर्थ, भावनाएँ और अनुभव अभिव्यक्त किए जाते हैं।*

[viii] (embodiment of cultural meaning) *का आशय है कि नृत्य के माध्यम से शरीर स्वयं सांस्कृतिक अर्थों, परंपराओं और सामुदायिक पहचान का जीवंत अभिव्यक्ति बन जाता है।*

संदर्भ सूची

Acton, Thomas A., and Gary Mundy. Romani Culture and Identity. University of Hertfordshire Press, 1997.

Bhatnagar, Manish. "Kalbelia Dance: Cultural Identity and Transformation." Indian Folklore Research Journal, vol. 12, no. 2, 2015, pp. 45–60.

Fraser, Angus. The Gypsies. Blackwell Publishers, 1995.

Hancock, Ian F. The Pariah Syndrome: An Account of Gypsy Slavery and Persecution. Karoma Publishers, 1987.

Kapadia, Karin. "Nomadic Communities and Cultural Expression in India." Economic and Political Weekly, vol. 38, no. 27, 2003, pp. 2801–2805.

Sharma, Kanhaiyalal. Folk Culture of Rajasthan. Rawat Publications, 2004.

Sinha, Rimjhim. Affinity Between Romani and Indian Musical Instruments. David Publishing Company, 2025.